रात्रिक्लास 9/5/68 सारी पाण्डव सेना है सभी हैं पण्डे। नाम भी पण्डा रखा हुआ है। पाण्डव सम्प्रदाय वह है कौरव सम्प्रदाय। कब गाये हुये थे। ज़रूर कहेंगे 5000 वर्ष पहले पाण्डव सम्प्रदाय थे, कौरव सम्प्रदाय भी थे। पाण्डवों को विजय कौरवों विनाश को प्राप्त हुए। फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट होती है। इनको नाटक वा ड्रामा कहेंगे। नई दुनियां सो पुरानी, सो नई। नई में क्या था पुरानी में क्या है सो अभी संगम पर तुम समझ रहे हो। पुरानी सो नई बनेगी ज़रूर संगम ही होगा। सिद्ध होता है वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट। जिसको बच्चे ही जानते हैं। शूद्र सम्प्रदाय नहीं जानते। ब्राह्मण सम्प्रदाय जानते हैं। दैवी सम्प्रदाय भी नहीं जानते हैं कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। इसमें मुँझने की दरकार ही नहीं। कहते हैं, पतित से पावन बनाओ। अभी बाप कहते हैं तुम पावन थे फिर पतित बने हो। अभी फिर सो पावन बनने पुरुषार्थ करना है। अपन को आत्मा समझो। देह के सभी धर्म त्याग अपन को आत्मा समझो। पतित–पावन बाप ही है। उसको अविनाशी सर्जन भी कहा जाता है। यह ईश्वरीय सर्जन मत देते हैं। क्या करो। पापात्मा तो बने हो। तमोप्रधान हो अभी मामेकं याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। कल्प–2 तुमको राय देता हूँ। ड्रामा अनुसार भक्ति में भी जाना ही है। भक्ति में पतित बन गये हैं। यह पापात्माओं की दुनियां कहेंगे ना। बेहद के बाप सुप्रीम बाप के हम संतान हैं। बाप कहते हैं याद करो जो पावन बनाते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को जो एवर पावन है उनको याद करना है। जिसको ही योग अग्नि कहा जाता है। बाप कहते हैं और सभी बातें छोड़ो। कोई भी संशय आए ; परन्तु पहले तो पावन बनना है ना। पावन बन जावेंगे अपने घर फिर सुखधाम। बाप पुरुषार्थ भी सहज कराते हैं। शान्तिधाम सुखधाम को याद करो। दुःखधाम को भूल जाओ। बाप भी घर से आये हैं। स्थापना कर सभी बच्चों को घर ले जावेंगे। कोई भी बात में मूँझ हो तो ब्राह्मणी समझा सकती है; परन्तु कोई भी संशय नहीं आना चाहिए। यह तो समझते हो बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है; इसलिए उनको याद करते हैं। वही लिबरेटर, गाइड भी बनते हैं। बाप कहते हैं मैं गाइड बन तुम बच्चों को घर ले जाता हूँ। संशय आने की दरकार ही नहीं। अगर आता है तो माया का वार है। वह संशय मिटा लेना चाहिए। और जबकि बेहद का बाप मिला है तो बाप को याद करने की ज़रूर खुशी होती है। बच्चे जानते हैं जबकि चित्र है तो ज़रूर नई दुनियां की बादशाही बाप ही देंगे। बाप आते ही हैं संगम पर। संगम युग पर ही तुम उत्तम (अधूरी मुरली)